युग-प्रभा

तृतीय रश्मि

युग-प्रभा

युग-भारती की पत्रिका

तृतीय अंक

25 सितम्बर, 2005

संरक्षक

श्री ओम शङ्कर

प्राचार्य, पं० दीनदयाल उपाध्याय
सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

संपादक - प्रवीण कुमार अग्रवाल

युग-भारती की प्रार्थना

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन् भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।।

न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्गं न पुनरभवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् ।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भागभवेत् ।।

ॐ० शान्तिः शान्तिः शान्तिः

मन अपना मजबूर नहीं है

—श्री ओमशंकर जी

क्यों उदास हो, दुनिया का दस्तूर यही है
अभी पास जो कुछ पल में ही दूर वही है
उगते सूरज का उमंग से स्वागत होता
अस्ताचल को अर्घ्य चढ़ाता कभी न कोई
सदा सत्य की पूजा होती सत्य नहीं है
टकराता विपदाओं से कोई ही कोई
इसीलिए जो जितना दुनियादार कुशल है
दुनियावालों की नजरों का नूर वही है ॥1॥
क्यों उदास हो - - - - - - -
सब सागर पूजते सम्पदा के लालच में
भजते सदा हिमालय को भी प्रत्याशा में
चन्दा सूरज ऋतुओं की आरती उतरती
सुख सुविधा सम्प्राति सुखों की अभिलाषा में
पूजा जाता हर देवता लाभ लेने को
दुनियादारी का कुछ अजब फितूर यही है ॥2॥
क्यों उदास हो - - - - - -
अपनेपन से कभी नहीं सन्तोष किसी को
देख पराई शान कामना ललचाती है
वाणी में तप संयम सत संतोष सरलता
इच्छायें आकुल-व्याकुल सी बल खाती हैं
कभी बना जो सहज प्रेम की परिभाषा-सा
नफरत उगल रहा है कौन ? जरूर वही है ॥3॥
क्यों उदास हो - - - - - - -

दुनिया में दुनियादारी के सिवा न कुछ भी
आदर्शों की बात ठगी का संसाधन है
खतम हुई पहचान आदमी के वजूद की
सोते जगते सदा एक ही आराधन है
स्वार्थ-सिद्धि सुख-सुविधा की ज़िन्दगी कि
सबकी मति पर चढ़ा सुरूर यही है ॥4॥
क्यों उदास हो - - - - -
अब उदास हो या विरक्त कुछ लाभ नहीं है
होना जो कुछ वही हो रहा इस धरती पर
नापो राह समेटो दुनिया हटो यहाँ से
व्यर्थ बीज फेंकना बाँझ बंजर परती पर
अपने को बरबाद करो मत स्वत्व सँम्हालो
साबित करो कि मन अपना मजबूर नहीं है ॥5॥
क्यों उदास हो - - - - -

✶

क्या आप जानते हैं ?

1. हल के चलाने से खेत में जोरेखा बन जाती है उसे 'सीता' कहते हैं। राजा जनक की पुत्री इसीलिए 'सीता' कहलाई क्योंकि संतान पाने की इच्छा से राजा जनक ने एक यज्ञ का आरम्भ किया था उसकी तैयारी के समय ''सीता'' इसी तरह की रेखा से मिलीं।

2. पराशर तथा सत्यवती के पुत्र कृष्णद्वैपायन का नाम 'व्यास' इसीलिए पड़ा क्योंकि इन्होंने वेदों के मंत्रों को क्रमबद्ध किया था।

3. पुलस्त्य ऋषि का पौत्र लंकापति इसलिए 'रावण' कहलाया क्योंकि उसने भगवान शिव की एक हजार वर्ष तक बहुत ऊँचे स्वर से स्तुति की थी। ['राव' अर्थात् चीख, दहाड़]

✶

पुकार ज्वाला की

—श्री ओमशंकर जी

जल जल री ऐसी ज्वाला जल
जिससे भस्मसात हो जाए छिपा हुआ हर दर का कलिमल

जल जल री - - -

जले ज्वाल विकराल लपट अम्बर को छू ले
दहक उठे कण-कण हर भेद-भाव को भूले
तेज तपस्वी बने भोग-भवनों से भागे
शौर्य दमकता बढ़े सत्य के आगे-आगे
क्षार क्षार हो जाए इस दुनिया में छल-बल ॥1॥

जल जल री - - -

जले ज्योति ज्वाला होकर सहमे अँधियारा
दमकें दिव्य प्रकाश ध्वस्त हो तम की कारा
भागें छिपे उलूक या कि सब जल मर जाएँ
लक्ष्मी मैया लीला का संवरण करें अपने घर जायें
फिर हो दिव्य प्रभात पुजे घर-घर में तपबल ॥2॥

जल जल री - - -

आग पकाए या कि पचाए तपे स्वयं में
ठूँठों से उपदेश सुने रहकर संयम में
सेवाव्रत ले नित्य अन्न का मल-जल ढोये
धरती में अंगार नहीं मल का बल बोए
रे ! संयम, धिक्कार तुझे, तू भी धू-धू जले ॥3॥

जल जल री - - -

अग्निबीज की कोख बाँझ क्यों चुप दावानल ?
आहुतियों के मन्त्र मौन क्यों अभिमन्त्रित जल ?
धुवाँ-धुवाँ विश्वास पराक्रम क्यों कुण्ठित है ?
थका-थका तप और तेज क्यों अवगुण्ठित है ?
री सुख की लालसा भस्म हो तू तिल-तिल जल ॥4॥

जल जल री - - -

ज्वाला जले कराल कि ऐसी अग-जग काँपे
वैभव के अम्बार मुखौटे मरघट ताकें
पंगु विचार जलें सतही व्यवहार भस्म हों
सब हो भस्मीभूत प्रलय की पूर्ण रस्म हो
आत्मबोध ! संन्यास छोड़, तर्पण करने चल ॥5॥

जल जल री - - -

जग में जले जवानी धधके जरा व्योम में
दम दम दमके सूर्यवंश फिर तमस तोम में
लोभ लाभ सुख-सुविधाओं की जलें होलियाँ
फिर से जगे फकीरी काँधे सजें झोलियाँ
तप कर नन्दन बने धरा मन फिर हो अविचल ॥6॥

जल जल री - - -

धरती जल आकाश जले पाताल-क्षार हो
वर्तमान संरचना पूरी धुवाँधार हो
नव विहान नव रचना की फिर बने भूमिका
जगे कल्पना लोक कर्म की सजे तूलिका
दिव्य सुधामय रूप धरे जग का नभ जल थल ॥7॥

जल जल री - - -

✶

शिक्षा

—श्री ओमशंकर जी

शिक्षा स्वाभिमान की जननी, स्वत्व-बोधिनी भाषा है
मन की संजीवनी बुद्धि के चिन्तन की परिभाषा है।
शिक्षा है सन्तोष सत्य की सत्ता तप की मर्यादा
काल-व्याल का 'कीलक' जग-जागरण तमस की पग-बाधा ।।
शिक्षा ब्रह्मचर्य का तेजस्, तपस् गृही का, यश का राग
वैखानस का त्याग, प्रखर संन्यासी का उद्दाम विराग।
शिक्षा सत्य, शील, संयम, सन्तोष शान्ति का मंगल-मंत्र
कीर्ति-शिखर का गैरिक ध्वज तप का भागीरथी-प्रवाह स्वतन्त्र ।।
शिक्षा है नासिका वेद की प्राण-पोषिका जीवन की
सुख-सपनों की राका मंगलमयी किरन नन्दन-वन की।
शिक्षा-हीन जगत जड़ता के बोझ तले घुटता रहता
क्षण भर सुख के लिए अनवरत अनगिनत पीड़ाएँ सहता ।।
'शिक्षा' को इसलिए सुनो, समझो भी जानो-पहचानों
अपने अपनों सहित सभी का हित-साधन भी संधानों।
शिक्षित वही सत्य को जिसने तन-मन से पहचान लिया
भले-बुरे का बोध सत्य की सत्ता का सच जान लिया ।।
शिक्षित होना लक्ष्य, न केवल शिक्षा पर चर्चा करना
तदाकार हो सके न तो फिर व्यर्थ मूर्ति-अर्चा करना।
शिक्षा है सुख-सार सृष्टि का मंगल-मूल सनातन है
आदि-अन्त से परे पुरातन भी अनंत अधुनातन है ।।
शिक्षा अक्षर-ज्ञान न केवल लिखा हुआ रट लिख देना
कीर-प्रकृति बन स्वयं दूसरों को वैसी ही सिख देना।
शिक्षा प्रखर तेजमय सूरज या अमृतमय चन्दा है
अँधियारी राहो पर जलता दीप्त दमकता 'नन्दा' है ।।
जो शिक्षित है उसे और कुछ पाने की दरकार नही
दुनियादारी में तृणभर भी उसको मिलता सार नहीं।
सेवा मे सुख और दान में मिलता है सन्तोष उसे
पीड़ित करते रहते हर क्षण धन वैभव के दोष उसे ।।

★

बिजली की आग से बचाव कैसे करें ?

—प्रदीप दीक्षित 88 बैच

(1) आग लगने के संभावित कारणों में से सबसे ज्यादा (70-80%) बिजली से होते हैं।

(2) लोड बढ़ना, फ्यूज का न होना, अर्थिंग का न होना, खराब रखरखाव, गलत वायरिंग, खराब टर्मिनल्स, विस्फोटक वातावरण इत्यादि मुख्य कारण हैं।

(3) सालों पुरानी वायरिंग उस समय के लोड के हिसाब से होती है समय बीतने पर विद्युत उपकरण बढ़ते रहते हैं जिसमें धारा प्रवाह होने पर तारों पर ज्यादा लोड पड़ता है व तार गरम हो जाता है और ऊपर लगा इंसुलेटर (PVC) उसकी गर्मी पाकर आग पकड़ लेता है तथा पिघल जाता है। फलस्वरूप दोनों तार (फेज व न्यूट्रल) चिपक जाते हैं और आग लग जाती है जिसे शार्ट सर्किट कहते हैं।

लगातार धारा प्रवाह रहने से आग को लगातार ऊर्जा मिलती रहती है जिससे बड़ा नुकसान संभव है।

(4) अतः लोड तारों की वहन क्षमता से ज्यादा न होने पाये इसके लिये MCB लगाते हैं इसकी जगह पर फ्यूज भी लगाया जा सकता है।

(5) एक ही साकेट में कई प्लग या एडाप्टर जोड़ देने से भी ओवर लोड की वजह से तार गरम होकर चिपक सकते हैं।

(6) साकेट में खुले तारों को न लगायें, ठीक से न लग पाने के कारण इनमें चिंगारी उत्पन्न होती जो कभी भी आग लगने का कारण हो सकती है।

(7) वायरिंग का सही तरीके से अर्थिंग होना बहुत जरूरी है। क्योंकि लगभग सभी उपकरण धातु (मेटल) के बने होते हैं जिसमें सिद्धान्ततः अन्दर की मशीन, वायरिंग या क्वाइल में करेंट जाना चाहिये जब कभी वह उपकरण की बाडी में आ जाये तो उसे अर्थिंग द्वारा जमीन में उतार दिया जाता है, अर्थिंग न होने पर वह झटका दे सकता है जोकि कभी-कभी व्यक्ति की मृत्यु का कारण भी बन सकता है और असामान्य धारा प्रवाह से सम्पर्क में रखी वस्तुओं में आग भी लग सकती है।

(8) इसके लिये घरों व प्रतिष्ठानों इत्यादि में ELCB (अर्थ लीकेज सर्किट ब्रेकर) लगाई जा सकती है जो सामान्यतः 30mA या 100mA रेटिंग की होनी चाहिये।

(9) बल्ब, चोक, प्रेस (IRONBOX), सोल्डरिंग रॉड, जैसे उपकरणों से गर्मी उत्पन्न होती है और यदि ये कपड़े, कागज, प्लास्टिक जैसी वस्तुओं के निरन्तर सम्पर्क में हैं तो आग लग सकती है।

(10) बिजली के तार कभी भी दरवाजे, खिड़कियाँ, कारपेट, दरी, मैट्स इत्यादि के बीच से नहीं निकालने चाहिये लगातार रगड़ खाने से या दबे रहने से तारों का इंसुलेशन (PVC) कुचल सकता है जिससे भी आग लग सकती है।

(11) फ्लेम प्रूफ, हीट प्रूफ या फायर प्रूफ तार पूरी तरह से फायर प्रूफ नहीं होते हैं इनमें लगा इंसुलेशन (PVC) कुछ समय के लिये गर्मी (हीट) को बढ़ने से रोके रखता है जिससे इंसुलेशन देरी से पिघलता है।

(12) सर्किट ब्रेकर समेत समस्त इलेक्ट्रिक उपकरणों, अर्थिंग, तारों की तथा कारखानों में HT ब्रेकर, LT ब्रेकर, ट्रांसफार्मर, डिस्ट्रीब्यूशन पैनल, टर्मिनल्स, रिले इत्यादि की जाँच लगभग हर तीन साल बाद होनी चाहिये।

(13) याद रखें सभी इले० सेफ्टी डिवाइसेस 100% फूलप्रूफ नहीं हो सकती हैं। यह एक बेहतर सुरक्षा दे सकती हैं मगर इनके पुराने हो जाने, डिफेक्ट होने, लगाने के तरीके, वातावरण परिवर्तन, खराब मेन्टिनेंस, उपकरणों में बदलाव, बाईपास कनेक्शन इत्यादि से ये भी प्रभावित होती है अतः उस स्थिति में ये भी धोखा दे सकती हैं।

(14) कुछ जगहें व वस्तुयें बिजली के एक ही स्पार्क से विस्फोटक चीजों में परिवर्तित हो सकती हैं जैसे, पेंट, वार्निश, एडहेसिव, पेट्रोल टैंक, सालवेंट, केमिकल, पटाखे, गैराज, LPG इत्यादि, इनको उठाते-रखते वक्त तापमान के साथ-साथ विशेष सावधानी बरतनी चाहिये। हो सके तो इनके आसपास बिजली के उपकरणों का स्थापन विशेष सुरक्षित तरीके से करना चाहिये।

(15) एक 60 वाट के बल्ब की गर्मी से भी पेट्रोल में आग लग सकती है।

(16) बिजली से आग लगने की दशा में सबसे पहले सप्लाई को बन्द करना चाहिये, यदि मेन स्विच में ही आग लगी है तो सूखी बालू डालनी चाहिये। इसमें पाउडर वाले या गैस वाले अग्निशमन यंत्र भी प्रयोग किये जा सकते हैं।

(17) किसी भी दशा में पानी का प्रयोग नहीं करना चाहिये। बालू का प्रयोग मशीनों में करना नुकसान दायक हो सकता है क्योंकि बालू के कण मोटे व ठोस होने की वजह से मशीनों को विशेषकर कम्प्यूटर चालित मशीनों को नुकसान पहुँचा सकते हैं या खराब कर सकते हैं। ऐसे में CO_2 गैस वाले या बहुत बारीक पाउडर कणों वाले अग्निशमन यंत्र उपयोग करने चाहिये।

(18) फायर बिग्रेड को बुलाते समय उन्हें यह जरूर बतायें कि आग बिजली से लगी है तथा निकटतम सबस्टेशन की सप्लाई बन्द है या नहीं।

*

YUG-PRABHA SUDOKU-1

—Praveen Agarwal

6			2		9			7
	4	2				9	3	
8	7			3			2	5
9			6	4	7			8
		7				6		
2			3	8	1			9
	2			9			6	
		8				7		
3		6	7		2	8		4

Fill in the grid so that every horizontal row, every vertical column and every 3× 3 box contains the digits 1 to 9, without repeating the numbers in the same row, column or box.

✶

सही उच्चारण महत्वपूर्ण भाग-2

—प्रवीण अग्रवाल

शब्द	सही उच्चारण	गलत उच्चारण
Answer	आन्सर	एन्स्वर
Biology	बाइ ऑलजि	बायोलॉजी
Climb	क्लाइम	क्लाइम्ब
Carriage	कैरिज	कैरिएज
Disease	डिज़ीज़	डिसीज़
Diet	डाइअट	डाइट
Decent	डीसण्ट	डिसैंट
Diary	डाइअरि	डाइरी
Epistle	इपिसल	एपिस्टल
Finished	फिनिश्ट	फिनिश्ड
Gymnastics	जिम्नैस्टिक्स	जिमनास्टिक्स
Guinea	गिनि	गिनिआ
Hurricane	हरिकन	हरिकेन
Insurance	इन्शुअरन्स	इन्श्योरेंस
Initial	इनिशल	इनिशिअल
Morale	मराल	मोराल
Rendezvous	रॉण्डिवू	रैण्डेज़ुवस
Video	विडिओ	वीडिओ
Veil	वेल	वील
Zero	ज़िअरो	ज़ीरो

The innocent and the beautiful, have no enemy but time.

W.B. Yeats

✶

''गीत मैं लिखता नहीं हूँ'' कुछ अंश

प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर जी का काव्य-संकलन ''गीत मैं लिखता नहीं हूँ' राष्ट्रप्रेम से पूर्ण एक ऐसा संकलन है जो निश्चित रूप से पाठक को देशप्रेम और सत्य की राह दिखाता है। यहाँ पर मैं इसी संग्रह के कुछ अंश प्रस्तुत कर रहा हूँ यूं तो यह आद्योपान्त पठनीय है लेकिन ये अंश इस अप्रतिम रचना को पढ़ने के लिए आपका मन अवश्य ललचा देंगे।

1. गाड़ी खड़ी पेड़ चलते हैं
   इसी तरह सबको छलते हैं

   (पहुँच गयी गाड़ी)

2. जहाँ सहोदर बैरी बनकर जूझ रहे हों रण में
   और पितामह जकड़ खड़े हों जहाँ व्यर्थ के प्रण में

   (राधा पीड़ा का प्रबन्ध है)

3. दिन में श्वेत कपोत उड़ाते रात बेंचते गोली

   (दुनिया कैसी रंग-रँगीली)

4. 'टोपी' कहीं 'लँगोटी' लेकर नोच रहे हैं 'बंदर'
   बैठे 'चरखा' तापरहे हैं सीत घुस गयी अंदर
   नीलामी पर चढ़ी 'अहिंसा' 'पूत' लगाते बोली

   (दुनिया कैसी रंग-रँगीली)

5. ललक थी इस कदर संसार को जाकर सजा दूँगा
   विवशता से भरे सुनसान में डंका बजा दूँगा

   (अपना गाँव याद आया)

6. दुनिया का बन्दर-बाँट समझना होगा
   हमको नकली भूगोल बदलना होगा

   (उद्बोधन)

7. जवानी को जवानी ने न जब-जब जान पाया है
   तभी गहरा अँधेरा व्योम में भरपूर छाया है

   (जवानी)

★

भगवान श्रीकृष्ण

—प्रवीण अग्रवाल

1. भाद्रपद कृष्णपक्ष की किस तिथि को गोकुल में नंदबाबा के घर भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव मनाया गया -

   (क) अष्टमी (ख) सप्तमी
   (ग) नवमी (घ) इनमें से कोई नहीं

2. राधा के पिता वृषभानु थे माँ का नाम बताएँ

   (क) मित्रविन्दा (ख) सत्या
   (ग) कीर्ति किशोरी (घ) भानुमती

3. शापित नलकूवर तथा मणिग्रीव किसके पुत्र थे

   (क) कुबेर (ख) नल तथा सुग्रीव
   (ग) रोमहर्षण (घ) बाली

4. पूतना तथा बकासुर का छोटा भाई अघासुर भगवान कृष्ण को मारने के लिए किस रूप में प्रकट हुआ

   (क) सर्प (ख) साँड़
   (ग) बत्तख (घ) बवंडर

5. शरद पूर्णिमा की रात में रासलीला सम्पन्न हुई थी। किस मास की पूर्णिमा शरद पूर्णिमा कहलाती है।

   (क) कार्तिक (ख) आश्विन
   (ग) चैत्र (घ) सावन

<u>उत्तर</u> : 1. (ग), 2. (ग), 3. (क), 4. (क), 5. (ख)

★

सामान्य ज्ञान -1

1. 'भागे हुए लोग', 'गोपुली गफूरन', 'सरोवर के हंस' तथा 'बोरीवली से बोरीबंदर तक' किस साहित्यकार की रचनाएँ हैं -

(क) वात्स्यायन (ख) शैलेश मटियानी

(ग) मुंशी प्रेमचन्द (घ) अज्ञेय

2. 1857 विद्रोह का मुखपत्र कौन सा था ?

(क) ग़दर (ख) पयाम-ए-आज़ादी

(ग) पैग़ाम-एआज़ादी (घ) मंगल मंगल

3. 1957 में बलरामपुर से लोकसभा के लिए कौन चुना गया था

(क) बलराम जाखड़ (ख) मधु दंडवते

(ग) अटलबिहारी वाजपेयी (घ) जगजीवन राम

4. 'नहुष नाटक' के रचयिता का नाम बताएँ

(क) गोपाल चन्द्र (ख) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(ग) माखनलाल चतुर्वेदी (घ) रामधारी सिंह दिनकर

5. 'पलवल की छोरी' के नाम से कौन जाना जाता है ?

(क) मेघा पाटेकर (ख) सुषमा स्वराज

(ग) तीजनबाई (घ) अरुन्धति रॉय

6. निम्नलिखित में से अब्राह्म लिंकन के पहले अमेरिका का राष्ट्रपति कौन था ?

(क) फ्रैंकलिन पियर्स (ख) जेम्स गारफील्ड

(ग) बेंजामिन हैरिसन (घ) सी०ए० आर्थर

उत्तर : 1. (ख), 2. (ख), 3. (ग), 4. (क), 5 (ख), 6 (क)

★

जड़ी-बूटियाँ

1. वनस्पति 'लाजवंती' को आमभाषा में हम किस नाम से पुकारते हैं ?

2. घोड़ा जीरा क्या है ?

3. 'ग्वारपाठा' जिसे संस्कृत में 'गृहकन्या' तथा 'अरबी' में 'मुसब्बर' कहते हैं। विज्ञापन जगत में किस नाम से जाना जाता है ?

4. इमली, जायफल, तुलसी को अंग्रेजी भाषा में क्या कहते हैं ?

5. जाफरे, सुरेनाई, मखमली, हजार ये इसकी जातियाँ हैं। हम किसकी बात कर रहे हैं ?

6. ब्राह्मी से मिलती-जुलती वनस्पति का नाम बताएँ ?

7. जायफल का छिलका सूखने पर अलग हो जाता है उसे क्या कहते हैं ?

8. दूब, बहेड़ा, इमली, आक व महुआ में किसके पत्ते बरगद के पत्ते के समान होते हैं ?

9. कचनार, गुड़हल या सत्यानाशी में किसके फूल गणेश जी को प्रिय हैं ?

उत्तर : 1. छुईमुई, 2. ईसबगोल, 3. Aloevera/Aloe, 4. Tamarind, Nutmeg, Basil,
5. गेंदे की, 6. मण्डूकपर्णी, 7. जावित्री, 8. आक, 9. गुड़हल के

✶

मेरा ख्याल था कि तुम मनुष्यों के समान मनुष्य होओगे। लेकिन देखा, जैसे सब हैं, वैसे तुम भी तो हो। घी दूध खाकर दम नहीं। देखो, साँप मिट्टी में अपने पेट को घसीटता हुआ चलता है। उससे बढ़कर तो शायद हीन कोई न होगा, लेकिन उसके शरीर पर भी पैर रख देने पर वह फन काढ़ लेता है। तुम लोगों का धैर्य क्या किसी तरह भी नष्ट नहीं होता ? - - - -

'आनंद मठ' से

मुद्रक एवं प्रकाशक
विश्व विजय प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

सामान्य ज्ञान - 2

1. रानी लक्ष्मीबाई का जन्म-स्थान कौन सा है ?

(क) झाँसी (ख) ग्वालियर
(ग) वाराणसी (घ) लखनऊ

2. मंगल पाण्डेय का जन्म-स्थान ग्राम नगवाँ मंगल पाण्डेय के जन्म के समय किस जिले के अन्तर्गत आता था ?

(क) बलिया (ख) आज़मगढ़
(ग) गाज़ीपुर (घ) फैज़ाबाद

3. इस्लामी कलैण्डर के अनुसार 'रमजान' के तुरन्त बाद कौन-सा महीना आता है ?

(क) रजब (ख) शावान
(ग) मुहर्रम (घ) शव्वाल

4. रोम ओलम्पिक्स (1960) की बहुचर्चित दौड़ मिल्खा सिंह ने किस लेन में की थी ?

(क) नं० 1 (ख) नं० 4
(ग) नं० 5 (घ) नं० 3

5. राजतरंगिणी के रचयिता का नाम बताएँ

(क) जयदेव (ख) कल्हण
(ग) कालिदास (घ) रत्नाकर

6. अढ़ाई दिन का झोपड़ा, नसियाँ मंदिर, तारागढ़ का सम्बन्ध किस स्थान से है ?

(क) अजमेर (ख) जयपुर
(ग) जैसलमेर (घ) बीकानेर

✶

उत्तर : 1. (ग), 2. (ग) 'बलिया' उस समय तहसील थी, 3. (क), 4. (ग), 5. (ख), 6. (क)

✶

सामान्य ज्ञान - 3

1. निम्नलिखित में कौन-सा चरित्र आनंद-मठ से सम्बन्धित नहीं है -

(क) भवानंद (ख) धीरानंद

(ग) सत्यानंद (घ) जीवानंद

2. निम्नलिखित में से किसका अर्थ 'सोमवार' नहीं है -

(क) पीर (ख) मंडे

(ग) यकशुम्बा (घ) दुशंबा

3. निम्नलिखित में से कौन-सा अर्जुन का एक नाम नहीं है -

(क) कपिध्वज (ख) कृष्ण

(ग) बृहन्नला (घ) गुडाकेश

4. निम्नलिखित में से कौन से कृष्ण पूर्णतम कृष्ण माने जाते हैं -

(क) द्वारिकावासी कृष्ण (ख) ब्रजवासी कृष्ण

(ग) मथुरावासी कृष्ण

5. भगवान् कृष्ण की माला का नाम क्या है ?

(क) जया (ख) विजया

(ग) नारायणी (घ) रोहिणी

6. निम्नलिखित में कौन-सा राधा का एक नाम नहीं है-

(क) रामा (ख) महरेटी

(ग) वार्षभानवी (घ) भामा

★

वास्तु-शास्त्र

1. निम्नलिखित में किन दो दिशाओं के मध्य नैऋत्य कोण होता है -

   (क) दक्षिण व पश्चिम (ख) पश्चिम व उत्तर

   (ग) उत्तर व पूर्व (घ) पूर्व व दक्षिण

2. पश्चिम दिशा का प्रतिनिधि देवता कौन सा है -

   (क) यम (ख) वरुण

   (ग) कुबेर (घ) सूर्य

3. निम्नलिखित में कौन-सा कथन सही नहीं है -

   (क) आग्नेय कोण में रसोई होनी चाहिए

   (ख) पूजा गृह तथा अध्ययन कक्ष ईशान कोण में होना चाहिए

   (ग) दक्षिण दिशा में शयन कक्ष होना चाहिए

   (घ) पूर्व दिशा में स्नानागार होना चाहिए

4. वास्तु पुरुष के चारों ओर कितने देवताओं का निवास होता है ?

   (क) सोलह (ख) बत्तीस

   (ग) चौसठ (घ) एक सौ अठाइस

5. वास्तु पुरुष की शिखा किस कोण में होती है ?

   (क) नैऋत्य (ख) ईशान

   (ग) वायव्य (घ) आग्नेय

उत्तर : 1. (क), 2. (ख), 3. सभी कथन सही हैं, 4. (ख), 5. (ख)

★

THE SUPREME TRUTH

—Vikas Agrawal

From : "pawan srivastava"--pksri@rediffmail.com---
To: pddv@yahoogroups.com
Sent: Saturday, August 28, 2005 7:22 AM
Subject : [pddv] Happy Janmasstami: Who is Lord Krishna ?

The Rig Veda I 164.46 states "Ekam sat vipra bahuddha vadanti". This means "GOD (TRUTH) is one & sages call him by many different names".

Question arises who is this Supreme Truth ?

In Vedic texts Lord Krishna has been described as one Supreme Truth and the source of incarnation of all other divine figures.

It is the Vedic literature that most clearly reveals the nature andidentity of the Absolute Truth or Supreme Personality. As with many of the Vedic texts, they begin to reveal this identity with ints that show how the Absolute is a person from which everything else originates. One such reference is the first and second verses of the Vedanta Sutras. The first verse states simply that "Now one should enquire into the Brahamn." This means that now that you have attained a human body, you should use your intelligence to discover what is really spiritual and what is the Absolute Truth. Then the second verse begins to explain what is this Absolute Truth. "He from whom everything originates is the Absolute." Thus, as it refers to "He", the source of all that exists the ultimate point of creation, is a person.

The Katha Upanishad (2.2.9) relates in like manner; "As with fire-the one original flame expands itself throughout the world by producing many more separate flames; similarly, the one Supreme Soul, who resides in every jiva, enters this cosmos and expands Himself in replica images known as pratibimba, or the jivas." Thus, herein we have further confirmation that the Lord exists outside of the created universe.

So who is this Being from whom all else is created ? Much more information is suplied from numerous Vedic sources. For example, the early Rig-Veda (1.22.20-21) relates that Lord Vishnu/Krishna is that Supreme Being, the Absolute Truth whose lotus feet all the demigods are always eager to see. His most sublime region is only visible to those endowed with spiritual vision, accessed by ever-vigilant devotion.

The Rig-veda continues elsewhere (1.154. 4-5): "Him whose three places that are filled with sweetness and imperishable joy, who verily alone upholds the threefold, the earth, the heaven, and all living beings. May I attain to His well-loved mansion where men devoted to the Gods are happy. For there springs the well of honey [or Soma] in Vishnu's highest step."

The Svetasvatara Upanishad has a similar verse. "No one is superior to Him, nothing is smaller or larger than Him. He is the one Supreme Being (purusha), who has created everything complete. On his planet. He is situated like a steadfast tree, emanating great effulgence."

As it is explained in the Caitanya-caritamrita (Adi. 2.106). Lord Krishna is the original primeval Lord, the source of all other expansions. All the revealed scriptures accept Sri

Krishna as the Supreme Lord. Furthermore (Cc. Adi 2.24-26), it goes on to relate that Lord Krishna Himself is the one undivided Absolute Truth and ultimate reality. he manifests in three features, namely the Brahman, Paramatmaand Bhagavan (the Supreme Personality). The Svetasvatara Upanishad (5.4) also explains that the Supreme Being. Lord Krishna, is worshipable by everyone; the one adorable God, repository of all goodness ruler of all creatures, born from the womb [in His pastime of Lord Krishna], for He is etemally present in all loving beings [as Supersoul]. Furthermore, it states (3.8) "I have realized this transcendental Personality of Godhead who shines most brilliantly like the sun beyond all darkness. Only by realizing Him one goes beyond the cycle of birth and deaths. Absolutely there is no other means to get God-realization."

The Svetasvatara Upanishad (5.6) further elaborates that Lord Krishna is the topmost of all the gods. "He is the most esoteric aspect hidden in the Upanishads which form the essence of the Vedas. Brahma knows Him as the source of himself as well as the Vedas. The gods like Shiva and the seers of the ancient, like Vamadeva rishi realizing Him, ever became dovetailed in His service and therefore they naturally became immortal." And in (6.7) it continues. "Let us take our final resort at Him who is the Transcendent and the only adorable Lord of the universe, who is the highest Deity over all the deities, the Supreme Ruler of all rulers- Him let us know as the Paramount Divinity."

The Gopala Tapani Upanishad, which is about Gopala or Krishna, is quite clear on this point, and naturally has numerous verses that explain the nature of the Absolute Truth and Lord Krishna. A few of such verses include the following. "Brahma with his full awareness emphatically said, 'Sri Krishna is the Supreme Divinity. (1.3) He who meditates on Sri Krishna, serves Him with unalloyed devotion and [makes His transcendental senses gratified by engaging one's own spiritual senses in] rendering service to Him-all of them become immortal and attain the summum bonum, or perfection of life. (1.10) Sri Krishna is that Supreme Divinity as the Paramount Etemal Reality among all other sentient beings and the Fountain-source of consciousness to all conscious beings. He is the only reality without a second but as a Supersoul dwelling in the cave of the hearts of all beings He rewards them in accrodance with their respective actions in life. Those men of intuitive wisdom who serve Him with loving devotion surely attain the highest perfection of life. Whereas those who do not do so never gain this highest beatitude of their lives. (1.22) This Sri Krishna who is most dear to you all is the cause of all causes. He is the efficient cause of the creation of the universe as well as the superintending force for propelling the jiva souls. Therefore, although He is the enjoyer as well as the Lord of all sacrifices, He is ever atmarama, self-satisfied." (2.17)

So, summarily, as it is explained and concluded in a variety of Vedic texts, Lord Krishna is the supreme Personality of Godhead. In other words, as it is said in Sanskrit, krsnas tu bhagavan svayam. Krishna is the source of all other incarnations and forms of God. He is the ultimate and end of all Truth and philosophical enquiry, the goal or end result of Vedanta. He is the all-attractive personality and source of all pleasure for which we are always hankering. He is the origin from which everything else manifests. He is the unlimited source of all power, wealth, fame, beauty, wisdom, and renunciation. Thus, no one is greater than Him. Since Krishna is the source of all living beings. He is also considered the Supreme Father and source of all worlds. He is shown with a blue or blackish complexion. This represents absolute, pure consciousness, which also is unconditional love.

Krishna is the embodiment of love. He is also sat-chit-ananda vigrada, which means the form of eternal knowledge and bliss.

The reason why the Lord is called "Krishna" is explained in a book known as the Sri Chaitany Upanishad, which is connected with the Athava-veda. In vese twelve it is explained. "These thee names of the Supeme Lod (Hai, Kishna and Rama) may be explained in the following way : (1) 'Hari' means 'He who unties [harati] the knot of material desire in the hearts of the living entities'. (2)

'Krishna' is divided into two syllables 'kish' and 'na'. 'Krish' means 'He who attracts the minds of all living entities', and 'na' means 'the supreme tanscendental pleasure'. These two syllables combine to become the name 'Krishna', and (3) 'Rama' means 'He who delights [ramayati] all living entities', and it also menas 'He who is full of transcendental bliss'. The maha-mantra consists of the repetition of these names of the Supreme Lord." In this way, Krishna's names represent His character and qualities, which, in this case, means the greatest and all attractive transcendental pleasure.

So, as we further our investigation of the identity of Sri Krishna in the Vedic literature, especially the Bhagavad-gita. Srimad-Bhagavatam. Vishnu Purana, Brahma-samhita, and many others, we find that they are full of descriptions of Lord Krishna as the Supreme Being. These actually can help us understand the nature of God regardless of which religion we may affiliate ourselves with. So let us find out more about God from these descriptions.

The Brihadaranyaka Upanishad says, purnam idam purnat purnam udacyate: "Although He expands in many ways, He keeps His original personality. His original spiritual body remains as it is." Thus, we can understand that God can expand His energies in many ways, but is not affected or diminished in His potency.

The invocation mantra of the Sri Ishopanishad says something similar :

Om purnam adah purnam idam

purnat purnam udachyate

purnasya purnam adaya

purnam evavashishyate

This menas, in essence, that the Supreme Beings completeand perfect, and whatever is expanded from His energies is also complete and does not take away from His potencies in any way. He remains as He is, the complete whole and the complete balance.

The Svetasvatara Upanishad (6.6) also states: "The supreme Personality of Godhead, the original person, has multifarious energies. He is the origin of material creation, and it is due to Him only that everything changes. He is the protector of religion and annihilator of all sinful activities. He is the master of all opulences." This verse specifically points out that only due to God's multipotencies does the world continue to change and be maintained. He also protects religion, which could not be done if He were impersonal or without form. This is only logical since it takes a person to watch over, protect, or maintain anything.

In the Katha Upanishad (2.2.13) there is the important verse; nityo nityanam chetanas chetananam eko bahunam yo vidadhati kaman. "He is the supreme eternally conscious person who maintains all other living entities." So, this Supreme Person is the Absolute Truth, as confirmed in the Caitanya-caritamrita (Adi 7.111): "According to direct understanding, the Absolute Truth is the Supreme Personality of Godhead, who has all spiritual opulences. No one can be equal to or greater than Him."

The Svetasvatara Upanishad (4.7-8) goes on to describe that. "The Supreme Lord is He who is referred to by the mantras of the Rig-veda, who resides in the topmost, eternal sky, and who elevates His saintly devotees to share that same position. One who has developed pure love for Him and realizes His uniqueness then appreciates His glories and is freed from sorrow. What further good can the Rig mantras bestow on one who knows that Supreme Lord? All who come to know Him achieve the supreme destination."

This is further corroborated in the Katha Upanishad (2.3.8-9) wherein it say: "Beyond the Brahmajyoity (nirguna or formless Brahman of the monist) there is the Great Purusha viz., Purushottama God who is all-pervading (as the Brahmajoiti) and without any empirical attributes, but having sat-chit-ananda-transcendental embodiment. He who realizes this Purushottama-tattva is finally liberated. Attaining a spiritual body he renders eternal service to the Purushottama [Supreme Being]. The Transcendental personality of Godhead is beyond the purview of occult vision. But He can be apprehended through a pure transparent mind imbibed with intuitive wisdom born out of unalloyed devotional practices in the very core of one's own unstinted heart-those who have really got such a vision have gained final beatitude."

Additional references further describe how Lord Krishna exists beyond the impersonal Brahman. The Svetasvatara Upanishad (6.7-8) relates that. "The Supreme Lord is the controller of all other controllers and He is the greatest of all the diverse planetary leaders. Everyone is under His control. All entities are delegated with particular power only by the Supreme Lord, they are not supreme themselves. He is also worshipable by all demigods and is the supreme director of all directors. Therefore, He is transcendental to all kinds of material leaders and controllers and is worshipable by all. There is no one greater than Him, and He is the supreme cause of all causes. He does not posses a bodily form like that of an ordinary living entity. There is no difference between His body and His soul. He is absolute [pure consciousness]. All His senses are transcendental. Any one of His senses can perform the action of any other sense. Therefore, no one is greater than Him or equal to Him. His potencies are multifatious, and thus His deeds are automatically performed as a natural sequence."

The Chandogya Upanishad (3.17.6-7) goes on to relate the need to become aware and focused on the Supreme Being. Sri Krishna. "Ghora Angihasa rishi advised his disciple that he should invoke Bhagavan Sri Krishna, the Son of Devakidevi [devakiputra], by repeating this triad thinking as if death is sitting upon his shoulder. "Thou art the Indestructible; Thou art the Unchangeable. Thou art the very Substratum that enlivens the entire universe." On culturing this he [the disciple] became free from desires. On this point there are two additional Rig verses.

"The light (Grace) that comes from the Primeval Fountain-Source dispels darkness of illusion like the morning sun dispelling the night darkness. [This is also found in Rig-veda 8.6.30] The Primeval Fountain-Source from Whom light (Grace) comes which dispels darkness viz., illusion of the soul like the morning sun dispels the darkness of the night and shines forth far beyond the universe. When we perceive that most Effulgent Highest Purusha (Supreme Person) dwelling in the world of Transcendent attain Him, the most Effulgent One Who is the God of all gods. We in ecstatic joy proclaim, 'Yea, we have attained Him. Yea, we have attained the summum bonum of life-Yea, the final beatitude in life." [This is also found in the Rig-veda 1.50.10]

In the Bhagavad-gita (10.12-13) Arjuna also explaints that Lord Krishna is the Supreme Brahman, the ultimate, the supreme abode and purifier, the Absolute Truth and the eternal

divine person. He is the primal God, transcendental and original, the unborn and all-pervading beauty. All the great sages such as Narada, Asita, Devala, and Vyasa proclaim this.

He goes on to say that Krishna is the original Personality, the Godhead. He is the only sanctuary of the manifested material world. He knows everything and is all that is knowable. He is above the matieral modes. With limitless form. He pervades the whole cosmic manifestation (Bg 11.38) Krishna is the father of the complete cosmic manifestation, the worshipable chief and spiritual master. No one is equal to Him, nor can anyone be one with Him. He is immeasurable. (Bg. 11.43)

Since Chapter One of this book has already established the superior revelatory nature of the Srimad-Bhagavatam in relating the character and qualities of Lord Krishna, naturally we will have to glean the verses within it to get a clearer view of who is Lord Krishna. Why is this the case ? Because other scriptures may als relate the nature of God, and even discuss Lord Krishna's pastimes, but do so with what ould be said is a reporter's view, simply and impartially stating the facts. But the Srimad Bhagavatam relates the pastimes and qualities of Lord Krishna from a participant's perspective. Thus, the neactar that can only come from the deep involvement of the associate and devotee is relayed within the vibrations of those verses. However, the receptivity of this nectar depends on two things one is the qualities of the receiver and how open or faithful the person is to such high thoughts and vibrations, and the other is whether the ecstasies within the message of the Bhagavatam get perverted or spoiled from the misinterpretation of a disbeliever or speculator who improperly writers or speaks the message.

It is like a light bulb being properly wired to the power house. Unless the light bulb is appropriately wired and works favorably, there will not be light. Similarly, unless the speaker and receiver of the message of the Bhagavatam are properly connected with favourable and unalloyed consciousness, the purity of the message will not manifest.

So, as we get into the Srimad-Bhagavatam, we find that the very first verse summarizes Lord Krishna's position. "O my Lord, Sri Krishna, son of Vasudeva, O all-pervading Personality of Godhead, I offer my respectful obeisances unto You. I mediatate on Lord Sri Krishna because He is the Absolute Truth and the primeval cause of all causes of the creation, sustenance and destruction of the manifested universes. He is directly and indirectly conscious of all manifestations, and He is independent because there is no other cause beyond Him. It is He only who first imparted the Vedic knowledge unto the heart of Brahmaji, the original living being. By Him even the great sages and demigods are placed into illusion ... Only because of Him do the material universes, temporarily manifested by the reactions of the three modes of nature, appear factual, although they are unreal. I therefore meditate upon Him, Lord Sri Krishna, who is eternally existent in the transcendental abode, which is forever free from the illusory representations of the material world. I meditate upon Him, for He is the Absolute Truth."

Later, when Uddhava visits Vrindavana, he talks with Nanda Maharaja and explains things in a similar way: "Nothing can be said to exist independent of Lord Acyuta-nothing heard or seen, nothing in the past, present or future, nothing moving or unmoving, great or small. He indeed is everything, for He is the Supreme Soul." (Bhag. 10.46.43)

These have been a few of the verses in the Vedic texts which explain the position of the Supreme Being but what does Lord Krishna say ?

*

GENEROSITY

—Krishna Kumar Shukla (1997)

Mahatma Gandhi went from city to city, village to village collecting funds for the Charkha Sangh. During one of his tours he addressed a meeting in Orissa.

After his speech a poor old woman got up. She was bent with age, her hair was grey and her clothes were in tatters. The volunteers tried to stop her, but she fought her way to the place where Gandhiji was sitting. "I must see him," she insisted and going up to Gandhiji touched his feet.

Then from the folds of her sari she brought out a copper coin and placed it at his feet. Gandhiji picked up the copper coin and put it away carefully.

The Charkha Sangh funds were under the charge of Jamnalal Bajaj. He asked— Gandhiji for the coin but Gandhiji refused. "I keep cheques worth thousands. of rupees for the Charkha Sangh," Jamnalal Bajaj said laughingly "yet you won't trust me with a copper coin."

"This copper coin is worth much more than those thousands," Gandhiji said.

"If a man has several lakhs and he gives away a thousand or two, it doesn't mean much.

But this coin was perhaps all that the poor woman possessed. She gave me all she had. That was very generous of her. What a great sacrifice she made.

That is why I value this copper coin more than a crore of rupees."

*

युग-प्रभा

युग-भारती

(पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था)